श्रमण १९९५ ०४ (फोल्डर नं. ०२५०२२)

सम्पादक - डॉ. अशोक कुमार सिंह

सह सम्पादक – डॉ. शिवप्रसाद

मुख्य टाइटल

अनुक्रमणिका

मन-शक्ति, स्वरूप और साधना-एक विश्लेषण – प्रो. सागरमल जैन ---------- ९७

जैन दर्शन में नैतिकता की सापेक्षता – प्रो. सागरमल जैन ---------- १२३

सदाचार के शाश्वत मानदण्ड – प्रो. सागरमल जैन ---------- १३४

जैन धर्म का लेश्या सिद्धान्त-एक विमर्श – प्रो. सागरमल जैन ---------- १५०

प्रज्ञापुरुष पं. जगन्नाथजी उपाध्याय की दृष्टि में बुद्ध व्यक्ति नहीं प्रक्रिया – प्रो. सागरमल जैन ---- १६६

पार्श्वनाथ विद्यापीठ के नये प्रकाशन---------- १७०

जैन जगत् ---------- १७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org